शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

foKfIr

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

rjkiFk dh dUnh; xfrfofèk;k dk lokfèkd ykdfi; lkIrkfgd e[ki=k

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १८ : अंक ११ : नई दिल्ली : १७-२३ जून २०१२

परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण पचपचरा में सुखसातापूर्वक विराजमान हैं। आचार्यवर का चतुर्मास जसोल में है। पूज्यप्रवर २९ जून को जसोल में चातुर्मासिक प्रवेश करेंगे। जसोल बाड़मेर जिले की पचपदरा तहसील से जुड़ा औद्योगिक नगर है। यहां से प्रमुख स्थानों की दूरी इस प्रकार है--जोधपुर १०५ किमी., जयपुर ४५० किमी., अहमदाबाद ४५० किमी., बाड़मेर ११० किमी., जैसलमेर २५० किमी., लूणी स्टेशन ७० किमी., नाकोड़ा ८ किमी.। निकटवर्ती रेलवे स्टेशन बालोतरा जसोल से मात्र ४ किमी. दूर है। दिल्ली और जयपुर से इंटरसिटी, गुवाहाटी से गुवाहाटी एक्सप्रेस द्वारा बालोतरा पहुंचा जा सकता है। अहमदाबाद, सूरत और मुम्बई से आने वाली सूर्यनगरी एक्सप्रेस तथा बीकानेर बान्द्रा एक्सप्रेस के स्टॉपेज लूणी और जोधपुर हैं। जोधपुर से सड़क मार्ग द्वारा बालोतरा-जसोल आसानी से पहुंचा जा सकता है। बसें और टैक्सियां यहां हर समय उपलब्ध रहती हैं। जोधपुर निकट का हवाईअड्डा है। दिल्ली, जयपुर, उदयपुर, मुम्बई और आगरा के लिए यहां से इंडियन एयरलाइंस, जेट एयर, एयरडेक्कन और किंगफिशर की प्रतिदिन उड़ानें हैं।

x.kkfèkifr x#no rqylh d f^o egki;k.k fnol ij

ije J); vkpk;Jh egkJe.k }kjk lePpkfjr xhr

iFkn'kd x#jkt rqylh iHkoj l;kjkthA
rjkiFk lirkt rqylh ekguxkjkthA
ekguxkjk gkj fg;kjk ftu'kklu ÜkxkjAA

dky x# jk ikou iVèkj Hk{ko x.k jk ukFkA
Fkkjk pyk Eg foHkojth nhT;k Egku lkFkAAƒAA

i{kkè;ku v.kor mTToy oj thou foKkuA
vlxe lEiknu euHkkou mi'kkHku vonkuAA„AA

xxkij e in vkpkjt xxkij ;ojktA
xxk.k e NkM ièkkj;k Egk lcu x.kjktAA…AA

egkJe.k in vkl;k e>u oRlyrk & fo'okl A
^egkJe.k* lfour x#pj.kk ipinjk lkYykl AA†AA

y; % मांड

Rs. 18/-
Rs. 18/-
Rs. 18/-
Rs. 18/-

ije J)s; vkpk;Jh egkJe.k ipinjk e

ver i#"k dk {kkjHkfe ipinjk e ikou io'k

^ tuA परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने रामसीन मूंगड़ा से नमक उत्पादन के लिए विख्यात पचपदरा के लिए प्रस्थान किया। मार्गवर्ती संकटमोचन बालाजी मन्दिर (धोरनाड़ी) से जुड़े कार्यकर्ताओं के अनुरोध पर आचार्यप्रवर मन्दिर परिसर में पधारे। पूज्यप्रवर यहां मंगलपाठ का उच्चारण कर कुछ क्षण के लिए आसीन भी हुए। पूज्यचरण ज्यों-ज्यों पचपदरा के सन्निकट बढ़ते जा रहे थे, त्यों-त्यों पचपदरावासियों का उल्लास शिखरों को छूता जा रहा था। हजारों श्रद्धालु आतुरता के साथ अपने आराध्य की अगवानी करने को समुत्सुक थे। उनकी प्रसन्न मुखाकृति और बुलन्द जयघोषों में उनका आन्तरिक श्रद्धा-ज्वार मुखरित हो रहा था।

पूज्यप्रवर ज्यों ही पचपदरा के बाहर की ओर स्थित गुलाब सर्कल पर पधारे, जनप्रवाह ने भव्य जुलूस का रूप ले लिया। जुलूस के मध्य पूज्यप्रवर स्थानीय पंचायत समिति के भारत निर्माण राजीव गांधी सेवाकेन्द्र नामक भवन में पधारे। यहां सरपंच श्रीमती कलावतीदेवी खारवाल और उपसरपंच श्री राकेश चोपड़ा ने अन्य वार्ड पंचों के साथ आचार्यवर का आस्थासिक्त स्वागत करते हुए मंगलपाठ सुना। खारवाल समाज के अनुरोध पर पूज्यवर उनके मठ में भी पधारे। गुलाब सर्कल से प्रारंभ हुआ भव्य स्वागत जुलूस गुलाबद्वार, दादावाड़ी, मेन बाजार, अहिंसा सर्कल होते हुए ओसवाल भवन पहुंचकर विशाल सभा के रूप में परिणत हो गया। आचार्यवर का बाईसदिवसीय पचपदरा प्रवास इसी भवन में निर्धारित है। आचार्यवर का आज का विहार लगभग १३ किमी. का रहा।

अहिंसा समवसरण में समायोजित स्वागत समारोह में तेरापंथ महिला मंडल, कन्यामंडल, किशोर मंडल एवं ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपने आराध्य के स्वागत में भावपूर्ण गीतों का संगान किया। आचार्यश्री महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति के संयोजक श्री पुखराज मदानी ने अभिनंदनपत्र का वाचन करते हुए गणमान्य व्यक्तियों के साथ उसे पूज्यवर को समर्पित किया। श्री विजयसिंह खारवाल ने ग्राम पंचायत की ओर से अभिनंदन पत्र का वाचन करते हुए सरपंच श्रीमती कलावतीदेवी एवं उपसरपंच श्री राकेश चोपड़ा के साथ उसे पूज्यचरणों में भेंट किया। स्थानीय तेयुप के अध्यक्ष श्री आनंद चोपड़ा, प्रवास व्यवस्था समिति के महामंत्री श्री डूंगरचन्द बागरेचा, सहसंयोजक श्री चिरंजीलाल चोपड़ा एवं तेरापंथ सभाध्यक्ष श्री नेमीचन्द आर. चोपड़ा ने अपने आराध्य के स्वागत में भाव सुमन अर्पित किए। मुनि विनीतकुमारजी, साध्वी कार्तिकयशाजी, समणी प्रणवप्रज्ञाजी एवं समणी आरोग्यप्रज्ञाजी ने अपने गांव में पूज्यवर के स्वागत में अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए। मुमुक्षु ज्योति ने पूज्यवर का अभिनंदन करते हुए दीक्षा आदेश प्रदान करने की प्रार्थना की। शासनश्री मुनि पानमलजी ने अपनी चतुर्मास भूमि पर पूज्यवर का स्वागत किया।

बाड़मेर जिलाप्रमुख श्रीमती मदन कौर ने अपने अभिभाषण में कहा--'आज के भौतिकवादी युग में आशा-किरण के रूप में आचार्यश्री महाश्रमण के दर्शन कर मैं स्वयं को अत्यन्त पुण्यशाली मान रही हूं। आप एक महान संत ही नहीं, महान विद्वान भी हैं। आपका दिशादर्शन एक नई क्रान्ति का शंखनाद करेगा।'

स्थानीय विधायक श्री मदन प्रजापत ने पूज्यप्रवर का स्वागत करते हुए कहा--'पूरा सिवांची-मालाणी क्षेत्र भाग्यशाली है कि आचार्यश्री महाश्रमणजी का पावन प्रवास यहां हो रहा है। आपके प्रवचनों का प्रभाव भी आम आदमी के जीवन में देखने को मिल रहा है। आपके चामत्कारिक व्यक्तित्व को शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। पचपदरा पदार्पण पर मैं आपके श्रीचरणों में श्रद्धाप्रणत हूं।'

राजस्थान के पूर्व गृह राज्यमंत्री श्री अमराराम चौधरी ने अपने आस्थासिक्त उद्गार व्यक्त करते हुए कहा--'आचार्यश्री महाश्रमण के पदार्पण से छत्तीस कौम की जनता आह्लादित है। आप त्याग की साक्षात् प्रतिमूर्ति हैं। पूरे विश्व में आपका अमृत सन्देश गूंजता है। आपकी अमृतमयी वाणी से इस क्षेत्र की जनता

में अवश्य ही बदलाव आएगा। इस अवसर पर आपके दर्शन कर स्वयं को मैं धन्य मानता हूं। आपके दर्शन से सारे दुःख दूर हो जाते हैं। इस नगरी में आपका बहुत-बहुत स्वागत और अभिनंदन।'

परम पावन आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'हमारी दुनिया में मंगल की कामना की जाती है। व्यक्ति स्वयं के प्रति और दूसरों के प्रति भी मंगलकामना करता है। शास्त्रकार कहते हैं कि धर्म सबसे बड़ा मंगल है। इससे बड़ा मंगल दुनिया में कोई दूसरा हो नहीं सकता। अहिंसा, संयम और तप को धर्म कहा गया। हमारी अहिंसा यात्रा का उद्‌देश्य है--अनुकंपा की चेतना का विकास। इसके चार आयाम हैं--नशामुक्ति, कन्या भ्रूणहत्या निरोध, साम्प्रदायिक सौहार्द एवं यथासंभव ईमानदारी का पालन। अनुकंपा की चेतना विकसित होने पर व्यक्ति अनेक पापकारी प्रवृत्तियों से स्वतः बच जाता है।

धर्म का दूसरा आयाम है--संयम। हम अपनी इन्द्रियों और मन पर संयम रखें। इन पर अनियंत्रण की स्थिति खतरनाक हो सकती है। जीवन की प्रत्येक प्रवृत्ति में संयम का प्रभाव झलके।

धर्म का तीसरा आयाम है--तपस्या। अनाहार, सेवा, विनय, सद्‌ग्रंथों का स्वाध्याय, ध्यान आदि इसके अन्तर्गत आते हैं। अहिंसा, संयम, तपस्या--यह त्रिविध धर्म जिसके जीवन में आ जाता है, मानो उसके जीवन में धर्म विराजमान हो जाता है। जो सतत धर्म में रहता है, उसे देवता भी प्रणाम करते हैं।'

पचपदरा आगमन के संदर्भ में परम श्रद्धेय आचार्यवर ने कहा--'सिवांची-मालाणी की यात्रा के दौरान आज हम पचपदरा आए हैं। यहां बाईस दिन का प्रवास एवं अन्य कार्यक्रम निर्धारित हैं। परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी ने यहां मर्यादा महोत्सव किया था। उस समय इसी परिसर में प्रवास हुआ था। धर्मसंघ के अनेक सदस्य पचपदरा से हैं। यहां के मुनि विनीतकुमारजी एक युवा संत हैं। ये अपने ढंग से सेवा कर रहे हैं। साध्वी कार्तिकयशा हमारे द्वारा दीक्षित साध्वी है। अच्छी प्रतिभाशाली साध्वी है। यहां की समणी आरोग्यप्रज्ञा और समणी प्रणवप्रज्ञा भी यहां उपस्थित हैं। इनके अतिरिक्त वर्तमान में मुनि कुमुदकुमारजी, साध्वी प्रमोदश्रीजी, साध्वी समीक्षाप्रभा, साध्वी नयप्रभा, साध्वी पुलकितयशा, साध्वी अपूर्वयशा, साध्वी रोहितयशा, समणी सुमनप्रज्ञा एवं समणी अमलप्रज्ञा भी पचपदरा के हैं, जो बहिर्विहार में हैं। सभी साधु-साध्वियां और समणियां खूब अच्छी साधना, सेवा और अच्छा कार्य करते रहें।'

पूज्यवर ने पचपदरा के दिवंगत मुनि केसरीचन्दजी, मुनि दुलीचन्दजी (पेंटर), मुनि बादरमलजी, मुनि गुणचन्दजी, साध्वी हीरांजी आदि साधु-साध्वियों का उल्लेख करते हुए उनके आत्मविकास की मंगलकामना अभिव्यक्त की। आचार्यवर ने मुमुक्षु ज्योति (पचपदरा) की प्रार्थना पर उसे ५ नवम्बर २०१२ को जसोल में समायोजित दीक्षा समारोह में दीक्षित करने की उद्‌घोषणा की।

आज सायंकाल अर्हत वंदना से पूर्व परमाराध्य आचार्यवर ने मुनिवृन्द की ओर उन्मुख होकर प्रतिक्रमण और अर्हत वंदना में भावक्रिया की प्रेरणा प्रदान की।

x.kkf/kifr x#no rqylh dk f^ok egkiz;k.k fnol

% tuA आषाढ़ कृष्णा तृतीया का दिन। गणाधिपति गुरुदेव तुलसी का १६वां महाप्रयाण दिवस। प्रातःकालीन कार्यक्रम में स्थानीय तेरापंथ कन्यामंडल, तेरापंथ महिला मंडल, श्री विजयराज संकलेचा, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा श्रीमती सूरज बरड़िया, सुश्री देवी हिरण एवं खूशबू भंडारी ने तेरापंथ धर्मसंघ के नवमाधिशास्ता के प्रति अपनी श्रद्धाप्रणति अर्पित की। मुनि विमलकुमारजी, मुनि राजकुमारजी, मुनि यशवंतकुमारजी, साध्वी संगीतप्रभाजी, साध्वी जिनरेखाजी, साध्वी मीमांसाप्रभाजी, समणी मल्लिप्रज्ञाजी, समणी निर्मलप्रज्ञाजी, समणी उन्नतप्रज्ञाजी एवं समणी प्रणवप्रज्ञाजी ने अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी के चरणकमलों में अपनी भावांजलि समर्पित की। साध्वीवृन्द ने समवेत स्वरों में गीत का संगान किया। गुरुदेव से अन्तिम वार्तालाप का सौभाग्य प्राप्त करने वाले श्री पदमचन्द पटावरी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने अपने वक्तव्य में कहा--'परमपूज्य आचार्य तुलसी के भीतर आनंद का अक्षय भंडार था। उनमें अनुकंपा की चेतना जागृत थी, उनका अन्तःकरण ज्ञान-दर्शन से ओतप्रोत था। उनके भीतर प्रेम का दरिया प्रवाहित था। इसी कारण उनके निकट आने वाला व्यक्ति आत्मीयता की अनुभूति करता था। उनका आभामंडल शक्तिसंपन्न था, मन और वाणी पवित्र थी। पवित्र मन, पवित्र वाणी और शक्तिशाली आभामंडल वाला व्यक्ति ही दूसरों को कुछ प्रदान कर सकता है।'

मंत्री मुनिश्री ने अपने प्रेरक अभिभाषण में कहा--'आचार्य तुलसी युगप्रवर्तक आचार्य थे। उन्होंने एक नए युग का प्रवर्तन किया। तेरापंथ धर्मसंघ में उन्होंने नए-नए उन्मेष स्थापित किए। वे एक महान समाजसुधारक थे। उन्होंने जैन शासन को समृद्ध बनाया। वे दृढ़संकल्पी व्यक्तित्व के धनी थे। सभी कार्यों को करते हुए उनके भीतर श्रमणत्व का भाव निरंतर विद्यमान रहता था। वे अपनी साधना के प्रति पूर्णतया जागरूक थे। तेरापंथ के ज्योतिर्धर नवमाधिशास्ता के आदर्श हमारे कण-कण में समाहित हों।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने भावपूर्ण वक्तव्य में कहा--'परमाराध्य गुरुदेव तुलसी का संपूर्ण जीवन साहसिक गाथाओं से भरा पड़ा है। वे एक आग्नेय पुरुष थे। अपने जीवन में उन्होंने जो स्वप्न देखे, उन्हें साकार करने के लिए दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़े तथा तेरापंथ को नया स्वरूप प्रदान किया। परमपूज्य कालूगणी ने अपने बाईस वर्षीय उत्तराधिकारी को विरासत में साहस दिया। आचार्य तुलसी की अन्तर्दृष्टि प्रखर थी। यही कारण था कि विरोधों के वातावरण में भी किए गए उनके निर्णय युगीन सिद्ध हुए। उनके रोम-रोम में साहस समाया हुआ था। मुझ जैसी अबोध साध्वी को साध्वीप्रमुखा पद पर प्रतिष्ठित करना उनका अद्भुत साहसिक कार्य था। उन्होंने मुझे अपने दायित्व का बोध दिया, शक्ति दी और कार्य करने का हौसला दिया। अब इस हौसले को परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी निरंतर वृद्धिंगत कर रहे हैं।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'आज हम परमपूज्य गुरुदेव तुलसी का १६वां महाप्रयाण दिवस मना रहे हैं। उस महान विलक्षण व्यक्तित्व को पूर्णतया व्याख्यायित नहीं किया जा सकता। कुछ वर्षों तक मुझे उनके काफी निकट रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। न केवल शरीर से, अपितु भावात्मक स्तर पर भी मैं उनके काफी निकट रहा। मुझे उनसे प्रशिक्षित होने का सुअवसर मिला। मैंने देखा पूज्यश्री में प्रकृष्ट पराक्रम था, पुरुषार्थ था। उनमें परित्याग की भावना थी। उन्होंने जिस प्रकार आचार्य पद का विसर्जन किया, तेरापंथ इतिहास की वह विरल घटना है। उनमें परिष्कार की भावना भी थी। अपने लेखन, गीत आदि में वे परिष्कार करते रहते थे। साधु-साध्वियों के जीवन में ही नहीं, वे स्वयं में भी यथापेक्षा परिष्कार करते थे। उनमें पवित्रता थी।'

घड़ी की ओर निहारते हुए परमपूज्य आचार्यवर ने कहा---अभी लगभग ११.१५ बज रहे हैं। लगभग यही समय था, जब पन्द्रह वर्ष पूर्व आज के दिन परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने अन्तिम सांस ली थी। एक महासूर्य हमसे अदृश्य हो गया था। एक दिव्य महापुरुष हमसे ओझल हो गया था। तेरापंथ शासन, जैन शासन और मानव जाति की महान सेवा करने वाले तथा उन्हें विशिष्ट अवदान देने वाले उस विलक्षण व्यक्तित्व के प्रति हमारी सविनय श्रद्धांजलि।'

पूज्यवर ने इस अवसर पर पूज्य गुरुदेव तुलसी की स्मृति में स्वरचित गीत का संगान किया। वह गीत इसी अंक के मुखपृष्ठ पर प्रकाशित है। अपने प्रवचन के उपरान्त पूज्यवर ने नवदीक्षित साध्वी हेमयशाजी को आर्षवाणी के उच्चारण के साथ छेदोपस्थापनीय चारित्र (बड़ी दीक्षा) का प्रत्याख्यान करवाया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

आज प्रातः परमाराध्य आचार्यवर की पावन सन्निधि में अखिल भारतीय महिला मंडल के तत्त्वावधान में द्विदिवसीय ६वें राष्ट्रीय कन्या अधिवेशन का शुभारंभ हुआ। 'उत्कर्ष' थीम पर आधारित इस अधिवेशन के शुभारंभ सत्र से पूर्व संभागी कन्याएं एक रैली के रूप में पूज्य सन्निधि में उपस्थित हुईं। पचपदरा कन्यामंडल

द्वारा मंगल संगान के उपरान्त अ.भा. तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती सूरज बरड़िया ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। परम श्रद्धेय आचार्यवर ने कन्याओं को अपना पावन संबोध प्रदान किया।

नवम राष्ट्रीय कन्या अधिवेशन परिसंपन्न

Š tuA परमपूज्य आचार्यवर की पावन सन्निधि में आज प्रातःकालीन कार्यक्रम में द्विदिवसीय राष्ट्रीय नवम कन्या अधिवेशन परिसंपन्न हुआ। कार्यक्रम के प्रारंभ में मुनि राजकुमारजी ने गीत का संगान किया। तेरापंथ कन्यामंडल बालोतरा ने मंगल संगान प्रस्तुत किया। सुश्री मोनिका छाजेड़ एवं सुश्री सोनल मादरेचा ने अपने विचारों को प्रस्तुति दी। अ.भा. तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा श्रीमती सूरज बरड़िया, महामंत्री श्रीमती पुष्पा बैद, तेरापंथ कन्या मंडल की राष्ट्रीय संयोजिका श्रीमती गुजरानी ने भावाभिव्यक्ति दी। कन्याओं द्वारा स्वीकृत ६५३० सामायिक संकल्पों को छतरी के आकार में प्रस्तुति दी गई। नव पदार्थ ग्रंथमाला के अन्तर्गत 'आश्रव-संवर' पुस्तक पूज्यवर के करकमलों में उपहृत की गई।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने अपने प्रेरक वक्तव्य में कहा--'कन्या अधिवेशन में संभागी कन्याओं को आचार्यश्री महाश्रमणजी की नवीन पुस्तक -संपन्न बनो' दी गई है। इस पुस्तक में आचार्यवर ने नए-नए गुर बताए हैं। प्रेक्षाध्यान में संपन्न बनने के अनेक सूत्र उपलब्ध हैं। व्यक्ति अर्थ व भौतिक सुख-सुविधा से संपन्न बन सकता है, किन्तु परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी ने आध्यात्मिक समृद्धि की प्राप्ति हेतु मंगलभावना का प्रयोग निर्दिष्ट किया।' मुख्यनियोजिकाजी ने कन्याओं को मंगलभावना का प्रयोग भी करवाया।

मंत्री मुनिश्री ने अपने प्रेरणादायी अभिभाषण में कहा--'कन्या को एक घर में बड़ा होना और दूसरे घर में अपनी सक्रियता व क्षमता का उपयोग करना होता है। कन्याएं जहां कहीं जाएं, अपने संस्कार और अपनी संस्कृति को न भूलें। उनमें ज्ञान के साथ साहस भी आए। प्रतिकूल परिस्थितियों को वे धैर्य के साथ सहना सीखें। जिस समाज की कन्याएं संस्कारी, शिक्षित, संयमित और संतुलित होती हैं, वह गौरवशाली बन जाता है।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने प्रेरणास्पद उद्‌बोधन में कहा--'कन्याओं ने अपनी क्षमता और अर्हता से सबको प्रभावित किया है। किन्तु अभी उनके सामने उत्कर्ष के अनेक शिखर हैं। उनमें एक है--स्वयं की पहचान। तेरापंथ कन्यामंडल और महिला मंडल के गणवेश की अपनी पहचान है। वे अपने चरित्र बल पर ऐसी पहचान कायम करें कि देखते ही लगे--ये तेरापंथ की कन्याएं हैं।'

महाश्रमणीजी ने आगे कहा--'तेरापंथ समाज की कन्याएं समाज को यह दिखा सकती हैं कि संपन्न कैसे बना जा सकता है? संपन्न बनने के लिए जरूरी है--नॉलेज, स्किल और एटिट्यूट। नॉलेज के क्षेत्र में कन्याएं आशातीत सफलताएं हासिल कर रही हैं। उनमें स्किल का भी विकास हुआ है। किन्तु जब तक पॉजिटिव एटीट्यूट का विकास नहीं होता, वे पूर्ण सफलता को प्राप्त नहीं कर सकतीं। कन्याओं के लिए भौतिक और आध्यात्मिक उत्कर्ष की दोनों दिशाएं खुली हैं। चयन उन्हें ही करना है कि किस दिशा में आगे बढ़ना है? समाज की कन्याओं से मैं कहना चाहती हूं कि वे अपने भावी जीवन का निर्णय खूब सोच-समझकर करें।'

परम पावन आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा--'हमारे जीवन में आत्मबल और मनोबल का बहुत महत्त्व है। जिस व्यक्ति में आत्मबल और मनोबल नहीं होता, उसके लिए थोड़ा-सा कठिन कार्य करना भी मुश्किल हो जाता है। जिसमें दोनों दृढ़ होते हैं, वह कठिन कार्य करने के लिए समुद्यत हो जाता है। जीवन में सपने पूरे करने के लिए संकल्प की दृढ़ता होनी चाहिए।'

कन्याओं को संबोधित करते हुए परम श्रद्धेय आचार्यवर ने कहा--'कन्याओं में अच्छी शक्ति है। उनमें

बौद्धिक बल भी अच्छा है। यदि उनमें विद्या के साथ विनय के संस्कार हैं तो वे आत्मकल्याण के साथ-साथ संघ और मानव जाति की सेवा कर सकती हैं। वे कुछ क्षेत्रों में विशेष उत्कर्ष को प्राप्त करें। विद्या के क्षेत्र में वे आगे बढ़ें। यदि वे साधना के जीवन को स्वीकार कर लेती हैं तो परम उत्कर्ष को प्राप्त कर सकती हैं। कन्याएं चिंतन करें कि हम साध्वी या समणी बनकर अपने जीवन को उत्कर्ष की दिशा में ले जाएं।' कन्याओं द्वारा स्वीकृत सामायिक के संकल्प की श्लाघा करते हुए पूज्यवर ने कहा--'कन्याओं ने सामायिक का अच्छा संकल्प लिया है। जीवन में पवित्र संकल्प होते हैं तो वे जीवन की संपदा बन जाते हैं।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने महिला जगत के विकास का संकल्प लिया। आज तेरापंथ समाज की महिलाओं ने जो विकास किया है, तेरापंथ महिला मंडल उसमें एक माध्यम बना है। तत्वज्ञान के क्षेत्र में तेरापंथ महिला मंडल जो कार्य कर रहा है, वह बहुत महत्त्वपूर्ण है। तत्त्वज्ञान पाठ्यक्रम के माध्यम से बहनों को तत्त्वज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ है। परीक्षण से लगा कि कई बहनों में तत्त्वज्ञान की कुछ पैनी दृष्टि है। तेरापंथ कन्या मंडल तेरापंथ महिला मंडल के तत्त्वावधान में अपना विकास कर रहा है। सभी कन्याएं अपना खूब आध्यात्मिक विकास करें।' कार्यक्रम में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के उपाध्यक्ष सहभागिता योजना के राष्ट्रीय प्रभारी श्री किशन डागलिया ने सहभागिता योजना से संबद्ध सामग्री पूज्यवर के करकमलों में उपहृत करते हुए अपने भावपूर्ण उद्गार व्यक्त किए।

कार्यक्रम का संचालन श्रीमती नीलम सेठिया ने किया। 'उत्कर्ष' थीम पर आधारित इस द्विदिवसीय कन्या अधिवेशन में देश के विभिन्न प्रान्तों की ४७५ कन्याएं संभागी बनीं। पूज्यवर के पावन पाथेय के अतिरिक्त महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी, मुख्यनियोजिकाजी, तेरापंथ महिला मंडल प्रभारी साध्वी कल्पलताजी, डा.हिमांशु जोशी, श्री राजेश खिंवेसरा, डा.महावीर गोलछा, अ.भा.तेरापंथ महिला मंडल की अनेक पदाधिकारियों, कार्यकारिणी सदस्यों आदि से प्रशिक्षण प्राप्त हुआ।

आज मध्याह्न में श्रीकृष्ण गोपाल गो सेवा समिति के कार्यकर्ता पूज्य सन्निधि में उपस्थित हुए। पूज्यवर से मंगलपाठ सुनकर समिति द्वारा जनहितार्थ एम्बुलेंस का लोकार्पण किया गया। बताया गया कि समिति द्वारा पहले से ही ग्यारह एम्बुलेंस संचालित हैं।

vkRefo'kkfek dk lkèku g§ ri

« tuA आज प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने पारलू में सात दिन पूर्व दीक्षित साध्वी प्रबुद्धयशाजी को आर्षवाणी के उच्चारण के साथ बड़ी दीक्षा प्रदान करते हुए उन्हें छेदोपस्थापनीय चारित्र का प्रत्याख्यान करवाया। इससे पूर्व नवदीक्षित साध्वी हेमप्रभाजी और साध्वी प्रबुद्धयशाजी ने अपने अनुभवों को प्रस्तुति दी। समणी सुमनप्रज्ञाजी ने अपने गांव में अपने आराध्य की अभ्यर्थना की। मुनि राजकुमारजी ने गीत का संगान किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'साधक के जीवन में तपस्या का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जैन वाङ्मय में तप के बारह प्रकार वर्णित हैं, जिन्हें निर्जरा के बारह प्रकार भी कहा जाता है। तप के द्वारा आत्मा की जो उज्ज्वलता होती है, कर्म झड़ते हैं, उसे निर्जरा कहा जाता है। अतः तप कारण है, निर्जरा कार्य है, किन्तु कारण और कार्य अभेद मान लिया जाए तो तप के बारह भेद निर्जरा के भी बन जाते हैं। तपस्या आत्मविशोधि का साधन है। साधक के लिए तप धन होता है। साधु का एक नाम है तपोधन। उसके पास धन-संपत्ति, मकान आदि नहीं होते, किन्तु साधना का इतना बड़ा धन उसके पास होता है, जिससे वह आध्यात्मिक वैभव से युक्त बन जाता है। एक प्रकार से वह सम्राट बन जाता है। न केवल साधु जीवन में, अपितु गार्हस्थ्य में भी तपस्या की जा सकती है। हमें निस्पृह भाव से भौतिक कामना से मुक्त होकर तपस्या-साधना करनी चाहिए।'

eèkj lxk;d lckèku

परमपूज्य आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन के अन्तर्गत प्रसंगवश कहा--'मुनिश्री हर्षलालजी स्वामी हमारे बहुत अच्छे संत हैं, पुराने संत हैं, बड़े विनीत संत हैं। मैंने इस बार इनका चतुर्मास बाड़मेर कहा तो गर्मी में भी ये जाने के लिए तैयार हो गए। गुरु इंगित को बहुमान देना बड़ी सेवा है। इन्हें सहयोग देने के लिए मैंने युवा मुनि राजकुमारजी को इनके सहवर्ती के रूप में जाने के लिए कहा। एकमात्र शासन की सेवा और इंगित की आराधना के लिए ये तैयार हो गए। यह बहुत बड़ी बात है। ये तपस्वी हैं। सत्रह वर्षों से निरंतर वर्षीतप कर रहे हैं। इनमें सेवा की भावना है। अच्छा गाते हैं। मैं तो कई बार इन्हें गाने के लिए कहता हूं। इनका संगान अच्छा लगा। इन्हें आज **eèkj lxk;d efu jktdekjth** के रूप में स्वीकार करता हूं।'

पूज्यवर ने प्रसंगवश मुनि यशवंतकुमारजी द्वारा वयोवृद्ध मुनि शान्तिप्रियजी को गुरु इंगित के अनुसार सिरियारी की ओर पहुंचाने तथा मुनि हर्षलालजी स्वामी को बाड़मेर की ओर पहुंचाने हेतु मुनि यशवंतकुमारजी एवं मुनि कान्तिकुमारजी की तत्परता की भी श्लाघा की।

uo;xy lfeukj dk lek;ktu

परम पावन आचार्यवर की मंगल सन्निधि में आज से अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा समायोजित द्वितीय द्विदिवसीय नवयुगल सेमिनार का शुभारंभ हुआ। प्रातः संभागी दम्पति पूज्य सन्निधि में उपस्थित हुए। पूज्यवर द्वारा मंगलपाठ के उच्चारण के साथ सेमिनार प्रारंभ हुआ। 'तालमेल' थीम पर आधारित इस सेमिनार के दौरान मध्याह्न में आयोजित ऊर्जा सत्र में पावन पाथेय प्रदान करते हुए परम श्रद्धेय आचार्यवर ने कहा--'विवाह संस्कार गार्हस्थ्य की दीक्षा होती है। दाम्पत्य जीवन में विशेष बात यह होती है कि पृथक-पृथक स्थानों पर जन्मे और अलग-अलग वातावरण में पले-पुसे व्यक्ति एक साथ रहते हैं। दाम्पत्य जीवन में तालमेल बना रहे व जीवन शान्तिमय, सुखमय और तनावमुक्त अवस्था में बीते, इसके लिए कुछ सूत्र हैं--

f- vukxg :-जहां व्यर्थ आग्रह होता है, खींचतान होती है, वहां तालमेल में कठिनाई होती है। दरवाजों में परस्पर तालमेल बिठाने के लिए बढ़ई उनमें कितनी काट-छांट करता है। इसी प्रकार दाम्पत्य जीवन में तालमेल के लिए दुराग्रह को काटने और त्यागने की अपेक्षा होती है। किसी नियम पालन के लिए आग्रह अच्छा होता है। किन्तु व्यवहार जगत में व्यर्थ आग्रह नहीं करना चाहिए। उदारता रहनी चाहिए।

„- #fp dk lEeku %- एक दूसरे की रुचि को बहुमान दिया जाता है तो तालमेल बनाए रखने में आसानी हो सकती है। परस्पर सम्मान की भावना भी रहनी चाहिए।

…- LokFk Hkkouk dk R;kx %-स्वार्थ भावना पारस्परिक सौहार्द का बाधक तत्त्व है। जहां तुच्छ स्वार्थ का त्याग और पारस्परिक हितचिंतन होता है, वहां तालमेल बना रह सकता है।

†- ijLij lgu dh {kerk %-जरा-सी प्रतिकूल बात होने पर असहिष्णुता का उभर आना पारस्परिक तालमेल में बाधक बनता है। पारस्परिक सहनशीलता से तालमेल की स्थिति का निर्माण हो सकता है। प्रतिकूलता को सहन करना कठिन तो हो सकता है, किन्तु बहुत लाभदायी भी होता है। मैं तो बहुधा कहा करता हूं कि एक दूसरे को सहना चाहिए, गलती पर यथावसर कहना चाहिए और शान्ति से रहना चाहिए। ये सूत्र जीवन में आ जाते हैं तो तालमेल बना रह सकता है। पूज्यवर ने नवदंपतियों को गुरुधारणा और भ्रूणहत्या को प्रश्रय न देने का संकल्प भी करवाया।

इस द्विदिवसीय सेमिनार में ५२ दम्पति संभागी बने। संभागियों को पूज्यवर के पावन पाथेय के अतिरिक्त महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी, मुख्यनियोजिकाजी, मंत्री मुनिश्री, मुनि उदितकुमारजी, मुनि कुमार श्रमणजी, तेरापंथ

महिला मंडल प्रभारी साध्वी कल्पलताजी, साध्वी शुभ्रयशाजी, साध्वी चारित्रयशाजी, डा.हिमांशु जोशी एवं कार्यक्रम संयोजिका श्रीमती पुखराज सेठिया से भी प्रशिक्षण प्राप्त हुआ।

आज रात्रि में प्रतिक्रमण के उपरान्त परमपूज्य आचार्यवर ने मुनिवृन्द को सेवा का महत्त्व बताते हुए आचार्य की इंगिताराधना तथा वृद्ध, रुग्ण व अक्षम साधुओं की सेवा हेतु तत्पर रहने की प्रेरणा प्रदान की।

'k) Hkkok e jguk % viu ?kj e jguk

f, tuA प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री ने अपने अभिभाषण में कहा--'सोचना अच्छा है, किन्तु मात्र सोचने से काम नहीं होने वाला है। सोचने के अनुरूप कार्य में संलग्न बनें। जीवन में कल्पना, पुरुषार्थ व भाग्य--इन तीनों का अपना मूल्य है। इनकी समन्विति से सफलता मिल सकती है। धर्म के क्षेत्र में व्यक्ति पुरुषार्थ करे। पुरुषार्थ की छेनी से वह अपने सामने खड़े अन्तराय के पहाड़ को तोड़ सकता है। यह अपेक्षा है कि व्यक्ति अपने प्रबल पुरुषार्थ के साथ अध्यात्म के क्षेत्र में आगे बढ़े।'

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'अध्यात्म के क्षेत्र में भावना का बड़ा महत्त्व है। शरीर व वाणी का अपना महत्त्व है, पर मुझे लगता है कि अध्यात्म के क्षेत्र में भावना का एक अलग ही मूल्य है। निर्जरा व बन्धन की दृष्टि से भाव की बड़ी भूमिका है। भाव ही बंधन व मोक्ष का कारण है। विषयासक्त भाव बंधन है और विषयाविरक्ति मोक्ष की ओर ले जाने वाली है। अपेक्षा है धर्म की साधना में पवित्र भावों को जीना सीखें।'

आचार्यवर ने परमपूज्य आचार्य तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ के अवदानों की चर्चा करते हुए कहा--'दोनों महापुरुषों ने अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवनविज्ञान जैसे महत्त्वपूर्ण अवदान दिए हैं। जीवनविज्ञान की आत्मा है भावनात्मक विकास। एक पढ़े-लिखे विद्वान के भीतर में यदि शान्ति नहीं है तो यह मानना चाहिए कि उसमें बौद्धिक विकास तो हुआ है, किन्तु अपेक्षित भावनात्मक विकास नहीं हुआ है। इस कारण उसमें शान्ति का संचार नहीं हो पाता। शान्ति के अभाव में पंडित व्यक्ति आत्महत्या का चिंतन भी कर लेता है। अशान्त को सुख कहां से मिलेगा? व्यक्ति भावशुद्धि का अभ्यास करे। प्रेक्षाध्यान के अभ्यास से प्रियता और अप्रियता के भावों से मुक्त हुआ जा सकता है। शुद्ध भावों में रहना अपने घर में रहना है। अशुद्ध भावों में रहने का मतलब है घर से बाहर रहना। वस्तुतः मन की निर्मलता व भावशुद्धि अध्यात्म का महत्त्वपूर्ण सूत्र है।'

जयपुर के लगभग एक सौ कार्यकर्ताओं का संघ आज गुरुचरणों में पहुंचा। कार्यक्रम में अनेक वक्ताओं ने यह प्रस्तुति दी कि लाडनूं चतुर्मास से पूर्व राजस्थान की राजधानी गुलाबी नगरी में पूज्य आचार्यवर का पदार्पण एवं प्रवास हो तथा वहां होली चौमासा, महावीर जयंती, अक्षयतृतीया जैसे कार्यक्रम आयोजित हों। इस प्रार्थना कार्यक्रम का संचालन श्री राजकुमार बरड़िया ने किया।

प्रार्थना के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'जयपुर के श्रावक समाज ने अपनी प्रार्थना प्रस्तुत की है। इनकी प्रार्थना औचित्यपूर्ण है, अच्छी भावना है। मैं एक जानकारी देना चाहता हूं कि कच्छ वालों की बलवती भावना है और इसके लिए उन्होंने कई बार निवेदन भी किया है। सर्वप्रथम यह तय करना है कि कच्छ जाना है या नहीं जाना है? जसोल पहुंचने के बाद २६ जून को निश्चित करना है। यह निश्चित होने के बाद अन्य स्थितियां स्पष्ट हो सकेंगी। आपने अपना फर्ज निभा दिया, अच्छी प्रस्तुति कर दी। अब हमें सोचना है कि क्या करना है?'

vkRek dh foLefr u gku n

ff tuA जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय द्वारा नियमित व पत्राचार के माध्यम से प्राच्य विद्या, जीवनोपयोगी शिक्षा व अन्य पाठ्यक्रमों का संचालन किया जाता है। बालोतरा क्षेत्र में जीवनविज्ञान एम.ए. की एक मासिक सम्पर्क कक्षा चल रही थी। इसमें सम्मिलित विद्यार्थी आज प्रातःकालीन कार्यक्रम में उपस्थित हुए। यूनिवर्सिटी

की कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञाजी भी इस अवसर पर उपस्थित थीं। यूनिवर्सिटी से जुड़े प्रशिक्षक श्री अशोक भास्कर ने विभिन्न शैक्षणिक प्रवृत्तियों की अवगति दी। सम्पर्क कक्षाओं के प्रबन्धक श्री घेवरचन्द मेहता ने अपने विचार रखे। मुनि राजकुमारजी ने गीत प्रस्तुत किया। मंत्री मुनिश्री का प्रेरक अभिभाषण हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'ज्ञान के द्वारा पदार्थों को जाना जाता है। जानकारी ज्ञान से होती है। इसलिए ज्ञान प्राप्ति के प्रयत्न होते हैं। कितने-कितने विद्यार्थी महाविद्यालयों एवं विद्यालयों में प्रविष्ट होते हैं, ज्ञानार्जन करते हैं। इसके लिए गांव-गांव में विद्या संस्थान खड़े मिलते हैं। माता-पिता अपने छोटे-छोटे लाडले बच्चों को किसी न किसी उम्मीद के साथ विद्यालयों में भेजते हैं। अभिभावकों को विद्या संस्थानों से तीन अपेक्षाएं हो सकती हैं। पहली अपेक्षा यह रहती है कि हमारा बच्चा ज्ञानसंपन्न बने। दूसरी अपेक्षा होती है ज्ञानसंपन्न बनकर आत्मनिर्भर बने, अर्थार्जन के योग्य बन जाए। तीसरी अपेक्षा यह कि हमारा बच्चा सुसंस्कारसंपन्न बने। इन तीन अपेक्षाओं की संपूर्ति जिस विद्या संस्थान से होती है, वह संस्थान शत-प्रतिशत सफल माना जाता है। यदि ऐसा नहीं होता है तो वह पूर्णतया सफल नहीं होता।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ ने शिक्षा के क्षेत्र में जीवनविज्ञान जैसा प्रकल्प प्रस्तुत किया। इसका उद्देश्य है--केवल बौद्धिक व शारीरिक विकास ही नहीं, मानसिक एवं भावनात्मक विकास भी होना चाहिए। जीवनविज्ञान कई विद्यालयों में फैला है।' ज्ञान के आयाम लौकिक विद्या व लोकोत्तर विद्या की चर्चा करते हुए आचार्यवर ने कहा--'विद्या संस्थानों में लौकिक विद्या पढ़ाई जाती है। इसके साथ अलौकिक, अर्थात आत्मविद्या पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। आत्मा को विस्मृत न होने दें। ज्ञान प्राप्ति की निष्पत्ति यह मानी जानी चाहिए कि व्यक्ति सन्मार्ग पर चले। स्वयं सन्मार्ग पर स्थित होकर दूसरों को भी उस पर स्थापित करने का प्रयास करें। इससे ज्ञान की महत्ता और उजागर होगी। व्यक्ति अपने संवेगों पर नियंत्रण रखे। अभ्यास और वैराग्य के द्वारा नियंत्रण किया जा सकता है।'

जैविभा यूनिवर्सिटी की प्रसंगवश चर्चा करते हुए यूनिवर्सिटी के अनुशास्ता आचार्यवर ने कहा--'इसमें गुरुदेव तुलसी व गुरुदेव महाप्रज्ञ की प्रेरणा रही है। यह लाडनूं में स्थापित है। इसमें प्राच्य विद्या पर कार्य चल रहा है। शोध भी चलता है, पत्राचार पाठ्यक्रम भी चलता है। इसमें जीवनविज्ञान भी एक विषय है। जैन विश्वभारती के अन्तर्गत जीवनविज्ञान अकादमी के द्वारा भी यह कार्य हो रहा है। जीवनविज्ञान का अध्ययन करने वाले यह ध्यान दें कि वे जीवनविज्ञान प्रशिक्षण को आत्मसात् करें, प्रयोग करें तथा दूसरों को भी प्रयोग सिखाने का प्रयत्न करें। यूनिवर्सिटी में संपर्क कक्षाएं भी अच्छी चलती हैं। समणी चारित्रप्रज्ञाजी इस यूनिवर्सिटी की कुलपति है। विश्वविद्यालय को अपनी सेवाएं दे रही है। इतने बड़े विश्वविद्यालय को संभालना, उसका प्रबंधन करना कोई सामान्य बात नहीं है। मुझे लगा कि अंग्रेजी भाषण का इनका अच्छा अभ्यास है।' बालोतरा क्षेत्र में चल रही यूनिवर्सिटी परीक्षा से संबद्ध श्री घेवरचन्दजी मेहता की तत्परता का भी पूज्यवर ने उल्लेख किया।

लन्दन प्रवास संपन्न कर आज समणी प्रतिभाप्रज्ञाजी व समणी विपुलप्रज्ञाजी ने गुरुदर्शन किए। समणी प्रतिभाप्रज्ञाजी व विपुलप्रज्ञाजी ने अपने श्रद्धासिक्त उद्गार व्यक्त करते हुए अपनी आन्तरिक प्रसन्नता को अभिव्यक्ति दी।

पूज्य आचार्यवर ने कहा--'समणी प्रतिभाप्रज्ञाजी लन्दन से आई है। ये प्रौढ़ समणी है और टमकोर की है। समणीगण में प्रतिभा है। टमकोर गांव के विद्यालय के विकास में संलग्न रही है। गांव में सेवा देती है और विदेश में भी काम करती है। समणी विपुलप्रज्ञाजी भी साथ में थी। ये भी अपना अच्छा विकास करें।' कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

efu g"kZykyth ^"kkluJh* lckèku ls lEekfur

f„ tuA सूर्योदय के बाद बाड़मेर चतुर्मास हेतु प्रस्थान करने से पूर्व मुनि हर्षलालजी (लाछुड़ा) गुरुचरणों

में पहुंचे। तब तक महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्रीजी साध्वियों के साथ गुरु वंदन हेतु पधार चुकी थी। आचार्यवर ने उस समय फरमाया--'मुनिश्री हर्षलालजी स्वामी के लिए मैंने एक दोहा बनाया है। आचार्यवर ने वह दोहा सुनाया--

enrk] lok Hkkouk] fyfidk'ky mRd"kA
'kklu dh lok djk] 'kkluJh efu g"kAA

पद्य निर्माण के साथ आचार्यवर ने अत्यन्त अनुगह करके मुनि हर्षलालजी को 'शासनश्री' संबोधन से संबोधित किया।

Lefr g iotUe dk ,d vkèkkj

f„ tuA आज प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री ने अपने अभिभाषण में कहा--'भगवान ने जागरण का सन्देश दिया है। नींद से जागना महत्त्वपूर्ण नहीं है। महत्त्वपूर्ण है अपने भीतर का जागरण। भीतर के जागरण के बाद व्यक्ति यह चिंतन करता है कि मेरा एक-एक क्षण अप्रमाद में बीते। उसकी धर्मयात्रा चलती रहे। धार्मिक वह होता है, जो अपने समय का सही उपयोग करता है। जो समय का सही अंकन नहीं करता, वह जागने पर भी नींद में रहता है।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'कर्मवाद आस्तिक विचारधारा का महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त है। दो प्रकार की विचारधाराएं हैं--आस्तिक व नास्तिक। आस्तिक मत जन्म-मरण, आत्मा, स्वर्ग व मोक्ष की अवधारणा को स्वीकार करता है। नास्तिक विचारधारा भौतिकवादी है। परलोक आदि प्रत्यक्ष नहीं हैं, अतः इसके बारे में सन्देह हो सकता है। स्मृति के आधार पर पूर्वजन्म की बात को हम नकार नहीं सकते। इस जन्म की भी अनेक बातें हमारी स्मृति में नहीं रहतीं। जिस दिन जन्म हुआ, जन्म के बाद के दो दिन, तीन माह या छह माह की बात किसे याद रहती है? कई बार तो कल क्या खाया, यह भी स्मृति में नहीं रहता तो पूर्वजन्म को याद रखना तो और भी कठिन है। ईहा, अपोह, मार्गणा, गवेषणा के आधार पर पूर्वजन्म की स्मृति हो सकती है।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'तर्क के द्वारा ज्ञान को वृद्धिंगत किया जा सकता है, इसलिए विद्वत्ता को बढ़ाने के लिए तर्कशक्ति का विकास आवश्यक है। विद्यार्थी में तार्किकता होनी चाहिए। शिक्षक में विद्यार्थी के तर्क को झेलने की क्षमता होनी चाहिए।'

कार्यक्रम में साध्वी संवेगप्रभाजी ने गीत का संगान किया। समणी कंचनप्रज्ञाजी ने गीत को प्रस्तुति दी। पचपदरा के तहसीलदार श्री बी. के. व्यास ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

Lefr&lcy

- बोलारम-हैदराबाद निवासी श्रीमती झणकारदेवी संचेती (धर्मपत्नी-स्व. मानमलजी संचेती) का निधन हो गया। भैसाणे का श्री राजमलजी संचेती का परिवार संघनिष्ठ व आस्थाशील परिवार है। इस परिवार के दो भाइयों--मानमलजी व कानमलजी ने गुरुदेव तुलसी की ऐतिहासिक दक्षिण यात्रा में अच्छी सेवा की थी। दोनों भाइयों की संघनिष्ठा का पूरे परिवार पर प्रभाव है। आज तो हैदराबाद में लगभग तेरह सौ श्रद्धा के परिवार हैं। उस जमाने में जब पचास से भी कम घर थे, इस परिवार के सदस्य बैलगाड़ी और ऐसे ही दूसरे साधनों से चारित्रात्माओं की मार्गवर्ती सेवा बड़ी भावना के साथ करते थे।

- श्रीडूंगरगढ़ निवासी श्रीमती गट्टूदेवी सिंघी (धर्मपत्नी-श्री तिलोकचन्द सिंघी) का चौहत्तर वर्ष की उम्र में देहान्त हो गया। चार सामायिक, दो घंटे मौन उनका नित्यप्रति का नियम था। पचास वर्षों से रात्रि भोजन व पैंसठ वर्षों से जमीकन्द का परित्याग था। तपस्या में पन्द्रह तक की लड़ी की हुई थी। पिछले पचीस वर्षों से पर्युषण उपासना गुरु-सन्निधि में करती थीं। गुवाहाटी क्षेत्र में विचरने वाले साधु-साध्वियों की मार्गवर्ती सेवा मनोयोग से करती थीं। स्व. साध्वी जेठांजी, स्व.साध्वी नोजांजी, शासन गौरव मुनि धनंजयकुमारजी व मुनि मलयजकुमारजी उनके संसारपक्षीय परिवार से संबद्ध हैं।
- मझल निवासी श्रीमती बक्खूबाई बिनायकिया (धर्मपत्नी-स्व.डायमलजी बिनायकिया) का नब्बे वर्ष की उम्र में चार घंटे के संथारे में स्वर्गवास हो गया। मुनि पृथ्वीराजजी (जसोल) ने उन्हें संथारे का प्रत्याख्यान करवाया। श्रीमती बिनायकिया पारमार्थिक शिक्षण संस्था में वर्षों तक संयोजक रहे स्व. राणमल जीरावला की बहन थीं। उन्होंने तपस्या के क्रम में एक से चौबीस तक की लड़ी संपन्न की। इसके साथ एक मासखमण, दो वर्षीतप, पैंतालीस अठाई तथा सावन-भाद्रव में छप्पन वर्ष तक एकान्तर तप किया। प्रायः प्रतिवर्ष एक ओळी तप भी करती थीं। उनकी तीनों सुपुत्रियां भी संस्कारवान हैं। बक्खूबाई गुरु सेवा के साथ समदड़ी में होने वाले चतुर्मास में वहीं रहकर सेवा-उपासना पूरे मनोयोग से करती थीं। ससुराल पक्ष मूर्तिपूजक आम्नाय का होते हुए भी भिक्षु स्वामी के प्रति उनकी अनन्य आस्था थी। उनकी ससुराल और पीहर पक्ष के लोगों ने बड़ी संख्या में गुरुचरणों में पहुंच कर आध्यात्मिक संबल प्राप्त किया।
- चित्तौड़गढ़ निवासी श्री हीरालाल खाब्या का नब्बे वर्ष की उम्र में देहावसान हो गया। हंसमुख और मिलनसार श्री खाब्याजी धर्मनिष्ठ तथा संघ व संघपति के प्रति अटूट आस्थाशील श्रावक थे। पूरा परिवार संस्कारी और समर्पित है।
- गादाणा निवासी रानीस्टेशन प्रवासी श्रीमती नारंगीदेवी गादिया (धर्मपत्नी-श्री मघराज गादिया) का 'ओम् भिक्षु' नाम स्मरण करते हुए देहावसान हो गया। वे संघ और संघपति के प्रति सर्वात्मना समर्पित और साधु-साध्वियों की सेवा में सदा तत्पर रहती थीं। उन्होंने अपने जीवन में दो वर्षीतप सहित दो अठाई, नौ, पन्द्रह व कई अन्य छोटी-बड़ी तपस्याएं कीं। पिछले तीस वर्षों से उनके जमीकन्द व रात्रि भोजन का परिहार था। संवत्सरी के दिन प्रतिवर्ष अष्टप्रहरी पौषध किया करती थीं।
- लाडनूं निवासी सूरत प्रवासी श्रीमती धापूदेवी चोरड़िया का एक दिन के तिविहार व पांच दिन के चौविहार संथारे में स्वर्गवास हो गया। श्रीमती धापूदेवी धर्मनिष्ठ श्राविका थीं।

vkpk;Z rqylh dh vkRedFkk ^esjk thou % esjk n'kZu* d lnHkZ esa fo'ks"k lpuk

शताब्दी पुरुष युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी की संपूर्ण आत्मकथा 'मेरा जीवन : मेरा दर्शन' तेईस खण्डों में मुद्रित होकर पाठकों के हाथ में पहुंच चुकी है। सैकड़ों-हजारों पाठकों ने पूरी लगन के साथ आत्मकथा के आंशिक स्वाध्याय से आह्लाद का अनुभव किया है, कर रहे हैं। कतिपय जागरूक पाठकों ने आत्मकथा के सन्दर्भ में अपने विचार प्रेषित किए हैं और कुछ घटनाओं से संबद्ध व्यक्तियों एवं दिनांकों के बारे में कहीं-कहीं सुझाव भी दिए हैं। अब चूंकि संपूर्ण आत्मकथा पाठकों के सामने है और आचार्यश्री की जन्मशताब्दी के अवसर पर उसे नए परिवेश में प्रस्तुत करने की योजना है, इस दृष्टि से सुधी पाठकों (साधु-साध्वियों, समण-समणियों, श्रावक-श्राविकाओं व समीक्षकों) से निवेदन है कि आत्मकथा के तेईस खण्डों के बारे में कोई भी सुझाव, संशोधन, संक्षेप, विस्तार आदि अपेक्षित प्रतीत हो तो पूरी उदारता के साथ अपने विचार लिखित रूप में प्रेषित करें। ३१ अगस्त २०१२ तक आपके विचार प्राप्त हो जाएं तो उनका उपयोग करने में सुविधा रहेगी।

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

पाठक अपने विचार निम्नलिखित पतों पर प्रेषित कर सकते हैं--

१. आदर्श साहित्य संघ, शिविर कार्यालय, फोन नं. ९६८००५५३८१, ९३५२४०४६४१,

२. श्री हेमन्त बैद, शिविर कार्यालय, जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, फोन नं. ९६७२९९६६६०, campoffice 13 @ gmail.com

fo'k"k fun'k lUn'k d fo"k; e

साधु-साध्वियां और समणश्रेणी व्यक्तिगत रूप में तथा स्मारिका, निर्देशिका, प्रतिवेदन (केन्द्रीय व स्थानीय) अभिनंदन ग्रंथ, स्मृतिग्रंथ आदि में अपना सन्देश न दें। श्रावक समाज भी इस विधि का ध्यान रखे।

vkn'k lkfgR; l?k dk HkV

५१००/- स्व. श्रीमती किरण जैन (धर्मपत्नी-श्रद्धानिष्ठ श्रावक प्रो. सुमेरचन्द जैन, बीकानेर) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र राजेन्द्र, सुनील, हनुमान एवं सुपौत्र प्रतीक, आदित्य, गौरव जैन द्वारा प्रदत्त।

३१००/- स्व. राकेश हीरालाल सिंघवी (कराई-पालघर) की स्मृति में श्री हीरालाल-हगामीबाई, धर्मेश-संगीता सिंघवी द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्री धनराजजी बोथरा (सुपुत्र-स्व. मूलचन्दजी बोथरा, गंगाशहर) की पुण्यस्मृति में लूणकरण, दीपचन्द, पूनमचन्द, ललितकुमार, पारसमल बोथरा द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्री बालचन्दजी डागा (सुपुत्र-स्व. श्री बनेचन्दजी डागा, सिरसा) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र हनुमानमल, आनंदकुमार, ललितकुमार, सुपौत्र नीलेश, समर्थ, ऋषभ डागा द्वारा प्रदत्त।

२१००/- डा. धनपत लूनिया को 'भारत ज्योति' सम्मान एवं डॉ. कुसुम लूनिया को 'आचार्य महाश्रमण व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व' निबन्ध प्रतियोगिता में अखिल भारतीय स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त करने के उपलक्ष्य में श्री जयचन्दलाल, बाबूलाल, विजयसिंह लूनिया, चाड़वास-दिल्ली, द्वारा-सेठ सोहनलाल टमकूदेवी लूनिया स्मृति कोष द्वारा प्रदत्त।

२१००/- चि. अजय (सुपौत्र-श्री हस्तीमल सुराना, सुपुत्र-मीठालाल सुराना, वेलूर) सह सौ. डिम्पल (सुपुत्री-श्री प्रकाशचन्दजी नाहर, बेंगलुरु) के परिणयोत्सव के उपलक्ष्य में प्रदत्त।

● जसोल से संबद्ध अधिक जानकारी के लिए तथा संघबद्ध रूप में जसोल पहुंचने वाले महानुभाव अपने आगमन की अग्रिम सूचना देने हेतु आचार्यश्री महाश्रमण चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के संयोजक श्री गौतमचन्द सालेचा से मोबाइल नं. ९४१४१०८२२९, महामंत्री श्री शान्तिलाल भंसाली से मोबाइल नं. ९४१४१०७७२७ एवं फैक्स नं. ०२९८८-२४०१३५ पर सम्पर्क कर सकते हैं।

d'koil lkn pronh] icUèkd&vkn'k lkfgR; l?k] }kjk&vkpk; egkJe.k iokl 0;oLFkk lfefr]
ik- tlky&…††,„† ft- ckMej ¼jktLFkku½ Qku % <^Š,,‡‡…Šƒ] <…‡„†,†^†ƒ

दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

idk'ku fnukd % ƒ^&^&„,ƒ„

●

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **d'koil lkn pronhA**